199

[illegible]

जा कृ तव

स्तोत्र
श्रीनारायण

ी

[illegible]

ओं श्रीगणेशायनमः ॥

अथ श्रीस्तोत्र नारायणी जी ॥ प्रथी जी ली जय सी हेगंप
ने का नाम ॥ जो है बन सभी काम पूरन तमाम ॥
कोई हो निहाल सफल हर ध्यान ॥ जो किरपा करे आप गंपत हरी
हरी हर हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे बीर क्यों देर इतनी करी ॥
ब्रह्म विष्णु शिव जो हैं इस के स्वरूप ॥ इये एक ही रूप तीनों स
रूप ॥ जैसा जल सभी रूप अनेक रूप ॥ जोवे सो श्री गौरी को सही
करी ॥ हरी हर हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे बीर क्यूं देर इतनी करी
सके से रूप और स भेसे ॥ रख्या नाम अपना महसा इशय रे
जो जो ध्यान मुनीर ने ध्यान रखे ॥ मेरे जूत मैं ते पर में पधारे ॥
हरी हर हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे बीर क्यूं देर इतनी करी ॥
तेरा नाम दुःख हर्ता है दीनानाथ ॥ ओंकार तनत गाई दूस मे
के साथ ॥ रखा नुमावालों को गिरधर के हाथ ॥ वही नाम
का रस्ता न धये ॥ हरी हर हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे बीर क्यूं
देर इतनी करी ॥ मन्द ने [illegible] ध्याया प्रहलाद को ॥

मक्षो हुभ्रगतने मेरीयाद्रको॥ नकी गीलवक्कु तुंध्या
को॥ किया रूपनरसिंह पड़ाह्लो हरी॥ हरी हर हरीहर हरी
हरहरी॥ मेरे बीरक्यूं देर हुतनी करी॥ नही छोड़ता रा
कावीज़ि कर॥ तुम्हो होके बांधे याउन को पिछ्र।।जो
हाथक्रमें जुड़ा तनसे मर॥ दह्रांसे जो निकले थे वनके
डुकरा॥ हरी हर हरी हर हरी हर हरी॥ मेरे बीरक्यूं देर इनी
के मेउजस्ड़ अधेपरीलार्दे केचीर॥ हरनाको नास्यूं नला
हैट्टर॥ लियारूप बावन ब्रह्मन का फेर॥ बलके द्वारे आ
ठेहरी॥ हरी हर हरी हर हरी हर हरी॥ मेरे बीरक्यूं देर इ
नीकरी॥ जोजल बोड़ने गज को घेराज मई॥ नले
याउसलाम नेरा कभी॥ जोजं गलब ने मदन गयूं व
हरीरूप होकरके पेड़ा हरी॥ हरी हर हरी हर हरी हर ह॥
ब्रह्मा बलकोनारयूना कुञ्ज को नीडे र॥ पस्से प्रभ सिं
टेके महने के वेर॥ कोरव करूणा पा जो गंगा वेद॥
सुदामा का सब देल दूदर हेर॥ हरी हर हरी ठहरी ले
हरीहर हरी॥

पापिन को लंक नकर्मे वो हरी ॥ मेरी देह ताती चोपा पों भरी ॥ जो
जिसने तेरे नाम लियो धुन धरी ॥ नरा स्येंतूं सुशानि तां किसी को
कही ॥ हरीहर हरीहर हरी हर हरी ॥ मेरे बीर क्यूं देर इतनी करी
नरसी भगत हुंडी करी ॥ सावल शाह ऊपर से उसा लिख धरी
दुष्टन ने लगी ॥ सावल शाह हो उसको हुंडी फिरी ॥ हरी हर
हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे बीर क्यूं देर इतनी करी ॥ वही ऊंट नेम
पाया नहीं ॥ नन्द लीला कू बहुत अजब भये ॥ सिर ऊपर प्रभु म
रूप दे राह परमेश्वर से करी ॥ हरीहर ३ हरी ॥ मेरे वीर क्यूं
देर इतनी करी ॥ जय सैन्य हरन गोहार को दुःख दिया यो हमारा दे
नाम तेरा लिया · जैसे दास सख्या हर सगया · दुरालाये मेरा मा की हर
हरी मेरे बीर क्यूं देर इतनी करी · जो रावन उस सुरजुव सिया ले गया · मने
अपनी सावे बीछु · सरजा भभीकन लाया · सिया को लाई अध्या फिर
हरीहर हरीहर हरीहर हरी · मेरे बीर क्यूं देर इतनी करी · जो जेत मे गा दिलका
काय हनुमान · वसो पवन पड़िया हनुमान होगई · परी थी वो रामें गा दुरन
... रन ... के उस ... जा करो · हरी हर हरी हर हरी ... रो ने

सनहासरसत्सहु पै दौड़ा · अहमां के यो ह्वै के रे आया · अहमां आप के स
रन आकर पाया · सनु पर एपहो वे मैं ला येह्री · हरी हर हरी हर हरी हर हरी
मेरे बीर क्यूं देर इतनी करी · जगला मौर ऊ ड़े नंदगा कुछ गोपाप · ऊये
जुगनो उनको सराप उरवल सीती नाथ पहूंचे जो आप · उरवल शा
नहीं उनको सराप दहरी ॥ हरी हर हरी हर हरी हर हरी · मेरे बीर क्यूं देर इ
हरी पतके के रों गुल न जोर लाख · दौना ललने पीर तब अपने हाथ चा
या · द्रौपद तुमने दीना नाथ · रख शर्म उसकी बनवारी · हरी हर २
वो है है आद तुम को जो रम कुं के चार · जो पर नेम आया याग़िनार दार · चढ़े
नाथ रथ पहूंचे ये स्वार · रक्षा अम रमकु नले आमहरी · हरी हर २
अजरइ कन्हैया ते सुना बंलगा · नसो तम शनो को फिरावन लगा · धू
न हाथ पद शिव के सहा करी · ा कत रूप शो शव के स रहा करी · हरि २
हरस्या श गिया से खबे के घंडो सपास · पुड़न श्यान के ज्यो की न्हो थी आस
नबरा जा हर्नास न दी रुखसारी · रक्षा नाथ पांडो की इस्याकरी · हरी
जो दहली भगत ने मोन ठाकुर लिया · सलो बन मिल के वे दिया
भगत नया ह्लमं ची दर्पा हरी · प्रम निया प्रतो सनो या हरी ·
हरी हर हरी हर हरी हर हरी ॥ मेरे बीर क्यूं देर इतनो करी

(५) जोदुशासन परजब कोपकी रो हुआ केहर देत रुक अंग आकर हू आ
बते खून का संदेह नेलगा· तोने रे विलप चों की रक्षा करी· हरी हर
हरी हर हरी हर हरी ॥ मोरे वीर क्यूं दे र इतनी करी· मेरे संत को कोई पावे
कहां ॥ मा धो दास को जा डुबा ता था जहां त्यार लात ही कर के पहुंचे व
हां· कूप बांधकर उसकी रक्षा करी हरी हर २ ॥ गरुड़ की सवारी पे
अधर तप कर रहा ॥ बड़ा वृन्दा त सज गुवह्न सको हुआ· कड़ह ग में फर नेत
उबटी पड़ा· सुदामा को आकर बचाया हरी· हरी हर २ ॥ बड़ा राघ
वों का जुल्म था जहां· रोवे घर तो व्यास दुवा देनि शो· आरे बत
सब राव नहुए शह सो· हरी किरपा करी बेड़ा भगतों हरी· हरी हर हरी २
धारी दे सतुन माता का भेश कर· चले घर से बाह ते री आ कर
लो भजन करे बे नव हुक पा उं पर· दयाल सत उसको गले लगा हरी· दु
तमी उमर कंस दुरा जन रहा· पलक में तूइ सका उद्धार न किया·
उग्र सेन को राजम पूरा दिया ॥ सदु पीन का पेट जो आवे हो
लिया पकी उसको पतीगाई नहीं इथ दम छलक लीपड़ी·
तिवे मुख से जा उसको मैं ना की निरा कुर ने हरवर ने कृष्ण क
री ॥ हरीहर हरी हर हरी ह· हरे ॥ मेरे वीर क्यूं देर इतनी करी ॥ ८ ॥

जोकीसांसे संहलिया मुडखेश्चा लगे देखने लोगाई घाऊ थर न
अनुचरहे देखकीसांउपर · रघ पावे परसाधी करी · हरीहर हरीहर
हरीहरहरी · मेरे थीर क्यूं देर इतनी करी · राजाने पकड़ के हिरण्का
तिल दिया ॥ जो धी येनी उसको नहीं छोड़ दिया · बेशन ने ने राजा न
लेकर पिया · उसे यसपे सेचा उसको भस्म न किया · हरीहर २ जो उठ
सेल जो ऊपर घोडी सो हजार · रहे बहुत राजा जरा संदनार · वहां
वृक्ष ने वीणा की नी पुकार · उसी वक्त उनकी आप्पन हरी · हरीहर
सुना नाथजी नाम नेरा भया · यहे नाम मन्त्र सरते पया · उस
ने नाम को लाजरा खो हरी · मेरे दुःख सभी काट रे दुःख हरी · हरीहर
तू है नाबिरादर बली रामका · मैं राखूं भरोसा तेरे नामका · नहीं कोई
दूजा लेरी शाम्का · तूंही है जगत नचीच करता हरी · हरीहर हरीहर
मेरी गजे हुये तीसो पालजी · नया कुल को नहीं बुझाओ पालजी
सीमसक्को दुःख लिये से सुरहालजी · तेरे बिन मेरा कोन है
दुःख हरी · हरीहर हरीहर हरीहर हरी · तेरे बिना क्यूं देर इतनी करी
ने · तूं है जगत को बीच तार करन रन · तूं ही है संगल लार सठ बाम्ठ पें

हरी हर हरी हर हरी हर हरे ॰ मेरी पीर क्यूं देर इत लीनी हरी ॰ करे विनती
दास तुलसी जबे ॰ करो दूर दुःख हूं सुख सजो जबे ॰ नरसिंह दास के
नमन नान्ही जाउं तू कृपाल है सब जानके हरी ॰ हरी हर हरी हर
हरी हर हरी हर जी हिरदे धार ॰ संकट काट क्यूं सरले करुणा कर
जन हैं इसको करदियादुख सबैं पार ॰ मगर धूलके सारे जो लिख
का हरी ॰ हरी हर हरी हर नरसिंहदास की विनती हर सुनो ॰
सब सुख दिये लन लख के दिये ॰ आनंद भ्या सब तुलसी के
जेकार ॰ अनंत जपने की उंची सब सुनकारी ॰ हरी हर हरी हर
हरी हर हरी ॰ मेरी पीर क्यूं देर इत लीनी हरी ॰ सनाच पढे मन
कर नर जो को ॰ सो फल जानन उसका सलो है ॥
है हरे प्रभु से पाचने भगत सी ॰ हूंद्रो जन्म नां ते सो
भालरे ॰ हरी हर हरी हर हरी हर हरे ॰ मेरी पीर क्यूं देर इत
लीनी ॥ इति समाप्त ॥ लि॰ सज्जाद अली॰ ॥

मुस्तफ़ाई प्रेस लाहौर में छपा